P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मध्यप्रदेश में विशेष रूप से कमजोर जनजातियाँ समूहों का छवि निर्माण

हरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान
शोद्यार्थी,
स्कूल ऑफ सोशल साइंस
एण्ड मैनेजमेंट स्टडीज,
डॉ.बी.आर.अम्बेडकर सामाजिक
विज्ञान विश्वविद्यालय, (महूँ)
इंदौर, म.प्र., भारत

सारांश

आजतक जनजातियों पर जो अध्ययन हुए उनमें मूलतः उनकी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को जाना गया। ऐसे बहुत कम शोध हुए जिन्होने अन्य समस्याए खोजी हो और हल के उपाय दिए हो। सरकार ने हमेशा आयोग गठन का ही इंतजार किया है ताकि वो हल निकाले, चुंकि उनके हल भी सिर्फ आधारभूत अर्थात आर्थिक व सामाजिक रहे है, इसके अलावा जो शोध हुए वे उनकी संस्कृति पर, विज्ञान में जेनेटिक, फिजिकल या भाषाई रूप से थे। परंतु कोई भी विशेष शोध नहीं हुआ जो उनके बारे में सोच को बदल सके। चुंकि कुछ शोध उनकी परंपराओं के बारे में बताते है पर वो ऐसे पेश करते है कि ये बहुत पिछड़े जनजातियों वाले लोग है, ये तो ऐसा करेगें ही। तब बाहरी दुनिया में उनके बारे में कोई सन्देश कभी गए ही नहीं, जो जाना चाहिए थे। अब यहाँ सन्देशों के चुने जाने की बात करे तो उन शोध कार्यो की आवश्यकता है जो उन सन्देशों को इकट्ठा करे और बाहरी दुनिया में दे जो आश्चर्य के साथ सम्मानजनक परिवर्तन लेकर आए। जनजातियाँ देश के कुल क्षेत्रफल के 15 प्रतिशत हिस्से में निवास करती है। ये जनजातियाँ देश के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारत सरकार ने लगभग 550 समुदायों को जनजाति समुदाय के रूप में चिन्हित किया है तथा 75 समुदायों को विशेष रूप से कमजोर जनजाति वर्ग के रूप में घोषित किया है जो भारत के 15 राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में फैली हुई जनजातियाँ है।

मुख्य शब्द : पी0वी0टी0जी, विशेष रुप से कमजोर, जनजातियाँ समूह तुलनात्मक अध्ययन, बैगा, भारिया एवं सरिया की वर्तमान स्थिति।

प्रस्तावना

अविभाजित मध्य प्रदेश में विशेष रूप से पिछड़ी हुई कमजोर जनजातियों में कुल 7 जनजाति समूहों को रखा गया था। परंतु नए राज्य छत्तीसगढ़ के गठन के पश्चात् मध्यप्रदेश में मात्र तीन ही पी.वी.टी.जी. जनजातियाँ रही जो है भारिया, बैगा, सहरिया। जो मध्यप्रदेश के विभिन्न हिस्सों में निवासरत् है जैसे भारिया पातालकोट जिला छिंदवाड़ा में रहते है, बैगा के निवास स्थान को बैगाचक के नाम से जाना जाता है जो कि म.प्र. के डिंडोरी, बालाघाट क्षेत्र में स्थित है, जिसका कुछ हिस्सा छत्तीसगढ़ राज्स में भी सम्मिलित है। सहरिया जिला श्योपुर, ग्वालियर और राजस्थान के कुछ हिस्से में निवासरत है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति की वर्तमान छवि का अध्ययन
2. बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति की छवि निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन।

शोध प्रविधि

उपर्युक्त शोध गुणात्मक एवं विवरणात्मक शोध हैं, जिसकी प्रविधि के अन्तर्गत मध्यप्रदेश में विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियाँ को लिया गया है। अध्ययन की इकाई में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति को लिया गया है। निदर्शन के अन्तर्गत बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति के गांवो का चयन परपसिव सेंपलिंग के आधार पर किया गया।

आंकड़ों का संकलन

आंकड़ो का संकलन प्राथमिक स्रोतों के द्वारा किया गया जिसमें समूह चर्चा एवं अवलोकन के आधार पर किया एवं द्वितीयक स्रोतों में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार के वार्षिक प्रतिवेदन, शोध–पत्रिकाएं आदि शामिल है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

छवि निर्माण और विज्ञापन

छवि निर्माण का अर्थ

छवि निर्माण और विज्ञापन बहुत बड़ी दुनिया है और साधारण रूप में बस इसका एक खाँचा खीचा जा सकता है। यह पूर्ण रूप से एक साथ सभी जगह समाहित नहीं हो सकती है, हमेशा विज्ञापन के कुछ पहलुओं पर काम चलता है जैसे एडवरटाईजर, प्लानिंग, फ्रेमवर्क्स, मार्केटिंग स्ट्रेटेजी, कम्युनिकेशन ऐजेन्सियाँ, सोशल, लीगल एंड ग्लोबल फैक्टर्स, निर्णय लेना, डाटा बेस मेनेजमेंट, सेल्स प्रमोशन, पब्लिक रिलेशन प्रोग्राम, टारगेट सेगमेंट, गोल्स एंड आब्जेक्टिव्स आदि को छवि निर्माण में शामिल किया जाता है। इमेज हमेशा प्राप्त जानकारियों के आधार पर ही बनती है। परमानेंन्ट इमेज कुछ अनुभवों से बनती है, पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है।

जनजाति छवि के रूप में अब तक यह माना जाता रहा है कि जनजातियाँ आर्थिक रूप से कमजोर, सामाजिक स्तर में पिछड़ी, राजनैतिक स्तर में कठपुतली स्वरूप मौजूद, पिछड़ी कृषि पर आधारित जीवन, शिक्षा में शुरूआती पायदान पर मौजूद, कुपोषण ग्रसित स्वास्थ्य, साहूकारो व अंधविश्वासों से भ्रमित, वनों में निवासरत, पेशे से मजदूर, पलायन प्रिय, गुटखा, शराब की लत से पीड़ित, कम साफ सुथरे, रंग में सांवले, दुबले, कुछ विशिष्ट पहनावे पहनते है। वहीं दूसरी ओर सकारात्मक छवि में जनजातियाँ अनोखे तथा सुंदर क्राफ्ट्स बनाती है, जो कि वनों से प्राप्त लकड़ी से बनते है। यदि इस संस्कृति को प्रमोट किया जाए तो यह सकारात्मक छवि निर्माण में सहायक होगा। जनजातियाँ क्षेत्रों में वनो से जुड़े उद्योगो को स्थापित किया जा सकता है, ये उनकी सृजनात्मक छवि निर्माण में सहायक होगा। छवि निर्माण आवश्यक उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करती है।

जनजातियों के अलावा अन्य समुदायों में महिलाएँ समानता एवं नेतृत्व के लिए संघर्ष कर रही है। जबकि जनजातियों में महिलाओं तथा पुरूषों का दर्जा समान है, एक महिला दूसरी शादी कर सकती है, अपनी पसंद का जीवनसाथी चुन सकती है, समाज और कार्य क्षेत्र में उनकी पहचान और जिम्मेदारियों को सीधे तौर पर देखा जा सकता है।

जनजाति छवि निर्माण

जनजाति छवि निर्माण के पहले हमें ये समझना होगा कि जनजाति क्या है ? उनकी समानताओं और असमानताओं को पहचानना होगा। उन पहलुओं को ऊपर लाना होगा जिनमें समानताए है। भारत संस्कृति एवं परंपराओं के रूप में विविधताओं से भरा देश है। मुख्य धारा के लोगो और जनजातियों के मध्य समानताए खोजनी होंगी। जनजाति इमेज गरीबी, भुखमरी, जंगल और आरक्षण के आस पास घूम रही है। जबकि जनजातियाँ के जीवन में जो बदलाव आए है उन्हे साथ जोड़ कर देखा नही जा रहा है। खुद जनजाति भी इसे जोड़ कर नहीं देख पा रही है। जनजातियाँ समाज में जो असमानताएं है उनमें अंतर को कम करना होगा ताकि वो भी उन विभिन्नताओं को स्वीकार कर सके। वहीं दूसरी तरफ जनजातियाँ समाज में जो समानता है उन्हे स्वयं के समाज में खुद प्रमोट करना होगा और उनकी असमानताओं को भी सकारात्मक रूप से स्वीकार करना होगा। जो जनजातियाँ साथ में रहती है वो भी एक दूसरे को स्वीकार नहीं करती हैं या नकारात्मक रूप से देखती है। जैसे मुख्य धारा की दुनिया में भारत में ब्राहमण, क्षत्रीय, वैश्य और शुद्र है। वैसे ही जनजातियों मे पुजारी अलग है उनमें भी गौंड अपने को उपर मानते है व अन्य को नीचे मानते है। हिन्दु धर्म में सामाजिक जीवन के जो स्तर दिखाई देते है वैसे ही जनजातियों में भी है। भील, भीलाला, गौंड, शाही गौंड ,पहाड़ी या गरीब गौंड में अंतर है। रोटी बेटी का व्यवहार वर्ण व्यवस्था से है। हिन्दु होते हुए भी ब्राहमण अपनी बेटी अन्य जाति को नहीं देना चाहते है, वैसे ही गौंड आदिवासी होते हुए भी अपनी बेटी भील, भीलाला, या अन्य जनजाति समाज में नहीं देना चाहते है। यह एक बड़ी सामाजिक जटिलता है, जिसे समझना आसान नहीं है, इसलिए दो दुनिया में एक साथ छवि निर्माण करना होगी। पहली दुनिया मुख्य धारा की व दूसरी दुनिया जनजातियों की। सरकार ने सूचियाँ बनाकर अधिकार, सुरक्षा और अवसर दिये है। परंतु एक सूची में ही अलग अलग जनजाति के लोगो को रखा गया है, ये सारी जनजातियाँ आज अपनी पहचान की तलाश कर ही है और जिस जनजाति की जनसंख्या ज्यादा है वो एकता में शक्ति भी दिखा रही है। इस व्यवस्था में जो जनजाति जनसंख्या में कम है वो अपने अधिकारो को खो देगी। मुख्य धारा में रहते हुए जिन जनजातियों ने अपने रीति–रिवाज, परंपराए, भाषा खो दी है वो जनजाति आज मुख्य धारा में बहुत अच्छे से घुल मिल रही है। परंतु यह भी देखा गया है कि उनकी छवि मुख्य धारा में सबसे निचले पायदान पर ही है। जो भी जनजाति, हिन्दु धर्म में शामिल हुई उसे वर्ण व्यवस्था अनुसार सबसे निचले स्तर, शुद्र में शामिल कर लिया गया। आज विकास के नाम पर, जनजातियों को मुख्य धारा से जोड़ने का जो काम हो रहा है, वह हिन्दुओं या अन्य धर्मो में सबसे निचले स्तर में शामिल होने जैसा है, वहीं जैन धर्म ने जनजातियों को स्वीकार नहीं किया है। बौद्ध धर्म में धर्मांतरित लोगो को नवबुद्धिष्टवादी कहा गया है यानि यहाँ भी अलग स्तर है। मुस्लिम समुदाय में भी उच्च सामाजिक स्तर पर जनजातियाँ कभी नहीं पहुँची। जब जनजाति मुख्य धारा में शामिल नहीं थी तब उनके अंदर नीचे होने की भावना नहीं थी। मुख्य धारा आर्थिक आधार पर बनी है, जिसमें धर्म मौजूद है, जबकि जनजातियों की दुनिया में आर्थिकता का कोई स्थान ही नहीं था और धर्म के नाम पर जंगल के देवता थे, जो सभी के लिए समान थे। यहाँ ऊँच–नीच के नियम मौजूद नहीं थे, बाद में जनजातियाँ जब दूसरी जनजातियाँ के साथ रहने लगी तब ये भावना आई और जो मुख्य धारा में लोग जनजातियों के संपर्क में आए तब इस भावना को तूल मिला और जनजातियाँ छवि लगातार खराब होती गई । इसकी एक दुखद वजह यह भी रही कि जनजातियों के जो सकारात्मक हिस्से थे उन्हे कभी ऊँचा उठाया ही नहीं गया। जब हम जनजातियों की उन स्ट्रेटेजिस की लिस्ट बना ले, तब इसे प्रमोट किया जाए और छवि निर्मांण किया जाए। जब भी कोई इमेज किसी समुदाय को किसी विशेष शक्ति के साथ जोड़ती है तो वो सीमित हो जाती है, परंतु अगर ये छवि उस देश की धरोहर के रूप में सकारात्मक रूप से बनाई जाए तो देश और समुदाय दोनों

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

को ही फायदा होगा। मुख्य धारा के लोग इस देश में गौरव के रूप में स्वीकार किए जा चुके है वहीं जनजाति समुदाय का गौरव के रूप में स्वीकार किया जाना शेष है। जब कोई एक जनजाति मुख्य धारा के किसी गौरव को हासिल करती है तब अन्य जनजातियाँ उसे नकरात्मक रूप से लेती है या उस पर ध्यान नहीं देती, इसके प्रति सकारात्मक सामाजिक नजरिया नहीं है। उदाहरण स्वरूप किसी भील जनजाति के व्यक्ति या समुदाय ने मुख्य धारा में मौजूद गर्व का काम किया हो जैसे तीरंदाजी में कोई पदक जीतना, तब भीलाला जनजाति के लोग इसे इस प्रकार देखेगें की उनसे कमतर स्तर के लोगो ने कोई कार्य किया है। वह यहाँ पर जनजाति एकता की भावना का प्रदर्शन नहीं करेगें। वर्तमान में भारत में कई अध्ययन हो रहे है पर वो सब प्रॉब्लम ओरिएन्टेड (समस्या आधारित) है। अतः जनजातियों के शोध में समस्याओं की छवि निर्माण की गई है। अगर उपायो की छवि निर्मांण की जाती तो जनजातियाँ क्षेत्रों की स्थिति अपने आप सही हो जाती। अभी तक ऐसा कोई प्लेटफार्म नहीं है जहाँ जनजातियों का जिक्र एक साथ हो सके और उनकी समस्याओं व मजबूत पहलुओं का जिक्र हो सके। जनजाति कौन है ? की वास्तविक छवि कभी निर्मित नहीं हो पाई है। आज आवश्यकता है कि जनजातियाँ समुदाय आपस में संपर्क करें और इस विषय को गंभीरता से ले। जब मुख्य धारा व जनजाति की छवि एक जैसी बनेगी तब महिलाओं की इमेज भी उभरेगी और मुख्य धारा की महिलाएं, जनजातियाँ महिलाओं की तरह कार्य करने व हाथ बटाने के लिए प्रेरित होगी। यह कदम महिलाओं की छवि निर्माण में भी बेहतरीन मोड़ लेगा।

आज भारतीय शिक्षा में जरूरत है भारतीय जनजातियों द्वारा लड़े गए युद्धों को पढाने की, उनकी वीर गाथाओं को प्रोत्साहन दिए जाने की, उनकी प्राचीनता के सहयोग की, अलग काल खंड में आजादी के दौरान उनके सहयोग की, सरकार अगर बच्चो के मन में जनजातियाँ लोगो के प्रति सम्मान जगाएगी तो वे खुद बड़े होकर उन्हे सम्मान देगें। जनजातियाँ छवि निर्माण के लिए उनकी प्रथाओं को जानने की जरूरत है, जो सामान्य जन को जानकारी दे कि वो क्या, क्यों कैसे, किसलिए है। अगर जनजाति की वर्तमान पीढी उनकी रस्में निभा रही है और क्यों, क्या, कैसे के जवाब नहीं जानती तो भारतीय शोधकर्ताओं की ये जिम्मेदारी है कि वो उन्हे उनके पूर्वजो की महानता के बारे में बताए जो उनके अंदर गर्व का भाव पैदा करेगा और वो खुद की छवि निर्माण में लग जाएगें। जिस भी समुदाय के पास गर्व नहीं होता उस पर अन्य समुदाय का प्रभाव अधिक होने लगता है और समय के साथ वह स्वयं अपना मूल अस्तित्व खो देता है। जनजातियों ने अपने जंगल के ज्ञान, प्रकृति में अपने लगाव, जड़ी बुटियों की जानकारी को कभी आगे नहीं बढाया, जिसके परिणामस्वरूप जनजातियों ने अपने पारंपरिक ज्ञान को खो दिया। वर्तमान में जरूरत है कि उनकी पहचान को बेहतर बनाया जाए, जनजातियाँ भाषाओं और बोलियों को बचाया जाए, उनके पहनावे को मुख्य धारा में प्रचलन में लाया जाए, उदाहरण के लिए एक दक्षिण भारतीय चाहे जिस भी पद पर हो, चाहे जहाँ रह रहा हो फिर भी अपने त्यौहारों के समय लुंगी पहनना गर्व समझता है। जनजातियों के औषधियों के ज्ञान को आयुर्वेद चिकित्सा से जोड़ा जा सकता है। जहाँ तक माध्यम की बात है, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो, आदि सभी माध्यम आवश्यक है। इन माध्यमों को अलग–अलग वर्गो में बांटना होगा, जैसे बाल, युवा, बुजुर्ग, बच्चो को स्कूल में, युवाओं को महाविद्यालयों में, इन माध्यमों व किताबों के जरिए सिखाना होगा। महाविद्यालयों, संस्थाओं के नाम जनजातियाँ वीर पुरूषो के नाम पर रखना होगें। ऐसी संस्थाए बनानी होगी जो जनजातियाँ विचारधारा को प्रोत्साहित करे। मुर्तियाँ बनानी होगी, चौराहों और संस्थानों में लगानी होगी, सड़को के नाम जनजातियाँ महापुरूषो के नाम पर रखने होगें, जनजातियाँ साहित्य छपवाना होगें, कुछ किताबों को पढना अनिवार्य करना होगा, जनजातियाँ लोगो को बड़े पद व सम्मान देने होगें, आर्थिक क्षेत्र की वित्तीय संस्थाए उनके नाम से खोलनी होगी। उन्हे योजनाओं में विशिष्ट लाभ देना होगा। जनजातियाँ लोगो को इतना शिक्षित करना होगा कि जब मुख्य धारा के लोग उनसे देश में जनजातियों के योगदान के बारे में पुछे तो वे गर्व से बता सके। राजनीति में जो हिस्सेदारी है उसे संगठित करना होगा। उनके पास बेहतरीन भोजन की रेसेपीस हो जो वे प्राकृतिक रूप से पकाना जानते है। अंग्रेजो ने जनजाति की जो आपराधिक छवि गढी थी उसे सुधारना होगा। आवश्यकता है कि जनजातियाँ क्षेत्रों में पर्यटन का विकास किया जाए, इन क्षेत्रों के पास आईआईटी, आईआईएम, अस्पताल, एयरपोर्ट, शोध संस्थान जैसे संस्थानो को स्थापित किया जाए। ये सभी प्रयास जनजाति छवि निर्माण के लिए बहुत बड़े कदम साबित होगें।

आज ऐसा माहौल बना दिया गया है कि जनजाति अपनी संस्कृति व परंपराओं को खुद नकरात्मक नजरिए से देखती है और अपने आप को जनजाति बताने से डरती है क्योंकि समाज के लोग उसके बारे में वही नजरिया बना लेगें जो की नकारात्मकता से भरा है। जनजातियों को ये डर है कि उनके हाथ से कई अवसर चले जाएगें क्योंकि अवसर देने वाले जनजाति को एक नकरात्मक छवि के रूप में देखते है। छवि निर्मांण की प्रक्रिया में सर्वाधिक प्रयास इस मुद्दे पर होना चाहिए कि जनजाति खुद पर गर्व करे और अपने संस्कृति को आधुनिकता के साथ लेकर चले, अपनी भाषा को बचाए। सरकार को भी यही कोशिश करनी चाहिए कि जनजाति को मुख्य धारा में शामिल होना उनकी संस्कृति के साथ में हो। वर्तमान में जनजाति की छवि कृषक की नहीं है अपितु मजदूर की है, वजह यह है कि उन्हे जो जमीनें मिली वो उपजाऊ नहीं है या उसमें पानी की सुविधा नहीं है। कई जगह तो बिजली भी नहीं है। जहाँ बिजली है वहाँ भी वोल्टेज की समस्या है जिससे वो सिंचाई योग्य नहीं है। जनजाति तक खाद और आधुनिक फसलों की जानकारी नहीं पहुँची।

जनजातियों के बारे में जनजातियों के अलावा अन्य लोगो का यह नजरिया रहा है कि वे स्वयं विकास करना ही नहीं चाहते। लेकिन जैसे ही सरकार की बेहतरीन नीतियों के क्रियान्वयन की असली स्थिति देखी जाती है तब पता चलता है कि योजनाओं का क्रियान्वयन उचित नहीं हो पा रही है। जनजातियाँ दूर दराज के इलाके में रहती है, इस बात को ऐसे उठाया जाता है जैसे जनजातियों की कोई गलती है कि वो अधिकारियों के कंफर्टेबल जोन के बाहर

रहते है, वो ये कहते है दूर तो आप है साहब हम तो यहीं रहते है। जब कुछ अधिकारी, एनजीओ, संस्थाएं और रिसर्चर जनजातियों से कहते है कि आप पी.वी.टी.जी. है तब वे पूँछते है कि ये क्या होता है ? और तब ये तार्किक होते हुए कहते है अशिक्षा, खेती का स्तर, पलायन, कुपोषण, जैसी समस्या है यहाँ पर। कई बार यह देखा गया है कि जो बीमारियाँ जनजातियाँ लोगों को आज हो रही है पहले वो उन्हे थी ही नहीं यानि बीमारियाँ के इतिहास में ये बीमारियाँ उसी समय से शुरू हुई है जबसे इनका संपर्क बाहरी लोगो से हुआ है। अन्य शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि ये बीमारियाँ बाहर से उन तक पहुँची है। जब जनजातियाँ क्षेत्रों पर बात की गई तो लोगो ने बताया कि उनके पूर्वज पहले भी बाहर काम करने जाते थे हालांकि उनकी बातों में जगह व दूरियों की स्पष्टता नहीं थी। परंतु भविष्य के अध्ययनों में हमें ये जानने की कोशिश करनी पड़ेगी कि जनजातियों के पलायन के पीछे का सच क्या है। जो पलायन पसंद समुदाय की वर्तमान छवि है, उसमें सुधार करने की जरूरत पड़ेगी। कई बार कहा जाता है कि बैगा, भारिया, सहरिया के लोग आपको ठीक से जवाब (रिस्पांस) नहीं करते या बाहरी लोगों से फेमेलियर नहीं होते जबकि वास्तविकता यह है कि शोधकर्ता, एनजीओ, संस्थाओं के अधिकारी, कर्मचारी अचानक से उनके सहवास पर पहुँचते हैं, और सीधे ही ढेर सारे सवाल पूँछना शुरू कर देते हैं। उन्हें इन लोगों की व्यवस्था और पहले से बनाई हुए योजनाओं की कोई चिंता नहीं होती वो सिर्फ उनकी जानकारी प्राप्त करना चाहते है। पी.वी.टी.जी. के केस में यह बहुत अधिक मात्रा में होता है। वो ये महसूस करते है कि ये लोग कहाँ से आ जाते है। मान लीजिए अगर कोई सेल्समैन रोज आपसे मिलने आए, तो आपके अंदर भी उसके प्रति उदासीनता आ जाएगी। जनजातियाँ छवि का सबसे खराब समय तब आया जब अंग्रेजो ने जनजातियाँ वर्गीकरण किया उसमें एक वर्ग आपराधिक जनजातियाँ भी थी। कई बार तो वे क्रांतिकारी भी थे जो अंग्रेजो का धन लूट कर हथियार या अन्य सामान खरीदना चाहते थे। जनजातियों को उनके खुद की तुलना की बजाय दूसरो के साथ उनकी तुलना की गई । यानि की अंग्रेजो ने फैसले लिए की जनजाति कैसी हो। उन्होने स्वयं कभी नहीं बताया कि वे स्वयं कैसे होना चाहते है। इसीलिए अंग्रेज साहित्य कुछ हद तक एकतरफा विचारधाराओ से ओतप्रोत है। जब अंग्रेज सरकार ने फोरेस्ट एक्ट लागू किया तो उन्होने जनजातियों को जंगल से वनोपज व लकड़ी लाने से रोक दिया। कारण दिया कि वो सरकारी जंगलो से कुछ नहीं ले सकते, इसे जनजाति के लोग कभी समझ ही नहीं पाए कि अचानक हुआ क्या अचानक ये लोग कहाँ से आ गए और ये जनजातियाँ जंगल को उनका जंगल कैसे कहने लगे और फिर उनका संघर्ष अंग्रेज सिपाहियो से होने लगा जिस वजह से अंग्रेजो ने कुछ जनजातियों को आपराधिक जनजातियाँ कह दिया जबकि असल में वे लोग अपना हक मांग रहे थे और अपना घर बचा रहे थे, उन लोगो से जिनके वो जंगल कभी थे ही नहीं। इस अध्ययन के दौरान यह भी देखने को मिला कि कई विशेषज्ञ यह मानते है कि वर्तमान में जो विकास हुआ है उसके लिए जनजातियाँ लोग तैयार नहीं है, या फिर अर्ह नहीं है। पहले उन्हे इस विकास के लायक बनाना होगा, जैसे जैसे ये विकास आगे बढ रहा है, वैसे जनजातियों के लिए ये जटिल होता जा रहा है इसके साथ जनजातियाँ लोग तभी सामंजस्य बिठा सकते है जब उन्हे विकास के लिए तैयार किया जाए। आदिवासियों की जंगल पद्धति रही है। हमें इंडिजीनियस नॉलेज को महत्व देना होगा इससे पहले की ये पूर्ण रूप से खत्म हो जाए। आज ये हालात है कि एक भारिया वैद्य के बेटे को ड्राइवर बना दिया गया है और उसे उन्नति और विकास कहा जा रहा है, जबकि होना ये चाहिए था कि वो वैद्य होता और तकनीकी को भी जानता तो इंडिजीनियस नॉलेज भी बच जाता और जड़ी बूटियों के ज्ञान होने की जनजातियों की छवि भी बनी रहती। जो लोग विशेष तौर पर पिछड़ी इन जनजातियों पर काम कर रहे है उन्हे इस हद तक संवेदनशील होना होगा कि वो समझ सके कि उनके एक गलत कदम से कितना नुकसान हो सकता है। जनजातियाँ लोगों की छवि भोले भाले लोगो के रूप में भी दिखाई जाती है। यहाँ भोले भाले से तात्पर्य है उनमें चालाकी और मतलबीपने की कमी है। जबकि जनजातियाँ लोग सच्चे और प्राकृतिक है। वर्तमान में शहरी जीवन पद्धति ऐसी हो चुकी है कि वो सब जगह प्रकृति के विरोधी है और जनजातियाँ लोगो को ऐसा विकास नहीं चाहिए जो विकास की आड़ में प्रकृति का विनाश करता हो। एस. सी. व एस. टी. ये दोनो शब्दों का साथ में इतना उपयोग हुआ है कि लोगो ने इन्हे एक ही मान लिया है, आज जातिगत भेदभाव जो जनजातियों के साथ कभी हुआ ही नहीं था वो अचानक से शुरू हो गया है। पहले एस. सी. के लोगो को ही डॉ. बी. आर. अम्बेडकर से संबंधित मानते थे परंतु एस. सी. व एस. टी. शब्दों के साथ इस्तेमाल से लोग सोचने लगे की इन दोनो श्रेणियों के महापुरूष एक ही है। लोगो द्वारा दोनो ही शब्दो को एक मानने से जो भेदभाव एस. सी. के साथ होता था वही एस. टी. के साथ भी होने लगा। बैगा जनजाति को पलायन के मामले में अन्य जातीयों से पीछे माना जाता है। परंतु सच तो यह है कि ड़िड़ोरी उमरिया में ऐसे विकसित क्षेत्रनहीं है जहॉ पर ये मजदूरी के लिए जा सके। यह दिक्कत भारिया के साथ भी है छिंदवाड़ा उस विकसित स्थिति में नहीं है कि वह भारिया के मजदूरो को बेहतर संतुष्टि दे सके। नागपुर वहॉ से दूर है और अन्य क्षेत्रदूरस्थ है। जनजातियाँ क्षेत्रों में जो पलायन हो रहा है वो सरकार की योजनाओं में कमियों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। आज जनजातियाँ लोग रोटी, कपड़ा, मकान जैसी आधारभूत सुविधाओ से वंचित है। जनजातियों की एक और छवि है कि ये जंगल खत्म करने वाले और उजाड़ने वाले है परंतु असल में जनजातियों के लोग जंगल में पेड़ काटते है मजदूर की हैसियत से, यह काम तो वन विभाग के लोग या निजी ठेकेदार या अवैध कटाई करने वाले लोग करा रहा है। जनजातियों के लिए जंगल उनका घर है और अन्य लोगो के लिए आर्थिकता के साधन।

साहित्यावलोकन

बैगा, भारिया और सहरिया जनजातियॉ सरल स्वभाव की होती है। इनकी अर्थव्यवस्था जंगलों एवं मजदूरी पर आश्रित है। लकड़ी काटना, जड़ी बूटियाँ, तेन्दुपत्ता, शहद, महुआ, लाख, गोंद, चीड़, चिरोंजी आदि

जंगली उत्पादों को एकत्रित करना, मछली पकड़ना, पशु पालन, मुर्गी पालन इनके प्रमुख उद्यम है।

म.प्र. के उत्तरी भाग में स्थित श्योपुर जिला, 5 तहसीलों यथा श्योपुर, बड़ौदा, विजयपुर, वीरपुर तथा करहाल से मिलकर बना है, जिसका क्षेत्रफल कुल 6606 वर्ग किलो मीटर है। आयाताकार ये जिला चंबल नदी के समीप है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 6,87,952 और 104 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. का जनसंख्या घनत्व है। यहाँ राजस्व ग्रामों की कुल संख्या 607 है। जिले की कुल जनसंख्या में 23.5 प्रतिषत जनसंख्या सहरिया जनजाति की है जो कि 345 ग्रामों में मौजूद है। ऐसा माना जाता है कि जंगल के निवासी होने तथा जंगल के राजा शेर की समीपता के कारण इन्हे सहरिया कहा जाता है । विद्वानों के अनुसार सहरिया शब्द, 'सेहर' शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ जंगल है। बैगा जनजाति मंडला, डिण्डोरी, शहडोल, अनुपपूर, उमरिया, राजनांदगांव, बिलासपुर, कवर्धा, सिवनी, छिंदवाड़ा एवं बालाघाट में निवास करती हैं। डिण्डोरी एवं बिलासपुर के बीच के भाग को बैगाचक कहते है। इन्हें आदिम जनजाति भूईयाँ की शाखा माना जाता है। बैगा जनजाति के लोग सदियों से वैद्य का कार्य करते आ रहे है। बैगा जनजाति में किसी की मृत्यु हो जाने पर जलाने और दफनाने दोनों की प्रथा अपनाई जाती है। बैगा समाज में धर्म के प्रति कोई स्पष्ट धारणा नहीं है। नागा उनका आदिम पुरूष है। वे स्वर्ग, नर्क और पुर्नजन्म को मानते है इसलिए 1931 की जनगणना में बैगाओं को एनिमिस्ट लिखा गया था और 1941 की जनगणना में बैगाओं ने अपने आप को हिन्दु घोषित किया। बैगाओं में कई लोक विश्वास है और आदिमपन ही उनका धर्म है। भारिया समाज के व्यक्ति जन्म, विवाह व मृत्यु संस्कारों का आयोजन करते है। इन संस्कारों के पीछे भारिया जनजाति अपने सामूहिक प्रक्रियाओं, अनुष्ठानों, रीति–रिवाजों व मान्यताओं को जीवित रखना चाहती है। भारिया समाज में सभी आयु वर्ग के मृतक संस्कार सामान्य रूप से किए जाते है। यहाँ सभी आयु वर्ग को जलाने का रिवाज है। आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है जिसका अर्थ है मूल निवासी। भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (लगभग 10 करोड़) हिस्सा आदिवासियों का है। भारत के संविधान में इन्हें 5वीं अनुसूची में अनुसूचित जनजातियों के रूप में मान्यता दी गई है। भारत सरकार द्वारा 75 जनजातियाँ समूहों को विशेष रूप से कमजोर जनजातियाँ समूह (पीवीटीजी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। भारत में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या – 2011 की जनसंख्या के अनुसार – 10,42,81,034 कुल, (ग्रामीण – 9,38,19,162, शहरी – 1,04,61,872) दशकीय जनसंख्या वृद्धि कुल – 23.7 प्रतिशत (दशकीय जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण – 21.3 प्रतिशत तथा शहरी – 49.7 प्रतिशत),भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति है। भारत की कुल अनुसूचित जनजाति का 14. 7 प्रतिशत हिस्सा मध्यप्रदेश में है। निम्न सूचकांको के आधार पर भारत के 75 आदिवासी समूहों को विशेष पिछड़ी हुई जनजाती की श्रेणी में रखा गया। इस श्रेणी का निर्धारण निम्न मापदंडो के आधार पर किया गया है ।

1. कृषि में पूर्व प्रोद्योगिकी स्तर,
2. साक्षरता का न्यूनतम स्तर
3. अत्यधिक पिछड़े एवं दूरदराज के क्षेत्रों में निवास करना,
4. स्थिर या घटती हुई जनसंख्या पिछले दो दशकों में मध्यप्रदेश में मौजूद विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों (बैगा, भारिया, सहरिया) की संख्या में वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में सहरिया समुदाय की जनसंख्या 4.502 लाख थी जो वर्ष 2011 में बढकर 6.149 लाख हो गई। इसी तरह बैगा समूह की जनसंख्या 3.329 लाख थी जो 2011 में बढ़कर 4.145 लाख हो गई। वहीं भारिया की जनसंख्या 1.524 लाख से बढ़कर 1.932 लाख हो गई। मध्यप्रदेश में आदिवासी समूह की कुल जनसंख्या 1.2233 करोड़ से बढ़कर 1.5316 करोड़ हो गई यानि की लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आदिवासी समूहों में लिंगानुपात वर्ष 2001 में 947 था जो 10 वर्षो में बढ़कर 984 हो गया। वर्तमान समय में बैगा, भारिया और सहरिया के धरातलीय विन्यास में परिवर्तन हो रहा है। जिसकी वजह है जंगलों का खत्म होना तथा मजदूरी के लिए इनका अपने मूल क्षेत्रों से दूर होना। इनकी आर्थिक एवं स्वाभाविक स्थिति में परिवर्तन लाता है। इन जंगलो का आधिपत्य शासन के पास आ जाने से कहीं ना कहीं इनके मूल उद्यम से हटके इन्हें जीवन निर्वाह सीखना पड़ रहा है। जिससे इनके मूल स्वभाव व जीवन में परिवर्तन हुआ है।

सुझाव

जनजातियाँ छवि निर्माण के लिए कुछ आवश्यक सुझाव इस प्रकार हो सकते है –

1. एकेडमिशियन्स को प्रत्येक वर्ष अपने किसी शोध पत्र के प्रश्नों के उत्तर भेजने होगें कि वो किस तरह से काम कर रहे है और उन्हे किस–किस तरह से हल किया जा सकता है। वर्ष में एक बार जनजातियाँ अध्ययन करना आवश्यक होगा।
2. पूरे भारत वर्ष में जनजातियों पर जो काम हो रहा है उन्हे एक प्लेटफार्म पर जोड़ना होगा ताकि विश्व स्तर पर लोग उनकी समस्याओं को जान सके और उनसे जुड़ी समस्याओं से अवगत हो सके।
3. कृषि को उद्योग के रूप में घोषित करके हम जनजातियाँ विकास को नए पहलुओ के साथ देख सकते है। जनजातियों की जो प्रकृति संबंधी समस्याएं है, जैसे कम पानी, ज्यादा पानी, उत्पादन इन्हे अगर खत्म कर दिया जाए तो नए सिरे से शुरूआत की जा सकती है।
4. भारत में प्राईवेट सेक्टर, सर्विस सेक्टर का बहुत बड़ा हिस्सा घेरता है। यहाँ आरक्षण की व्यवस्था नहीं है इसलिए यहॉ जनजाति तृतीय श्रेणी तक भी नहीं पहुँच रही है। वह निजी क्षेत्रमें मजदूर से उपर की भूमिका में नहीं है अतः निजी क्षेत्र में उसकी छवि मजदूर की है। यहाँ सरकार को आवश्यकता है कि वो आरक्षण की सुविधा को यहाँ भी लागु करे ताकि निजी क्षेत्रमें भी जनजाति लोगो की भूमिका को बढ़ाया जा सके।
5. आज आवश्यकता है कि कुछ खेलो को चिन्हित किया जाए, जो जनजाति लोगो में संस्कृति का

हिस्सा रहे और उन्हे वो सिखाए जाए या उन परंपराओं खेलो को भारतीय खेलों की सूची में शामिल किये जाए ये क्षेत्रजनजाति छवि निर्माण को बेहतर बना देगा।

6. जनजाति खाद्य पदार्थ जैविक है और वो रेसिपी जो मुख्य धारा का समाज भूल गया है उसे देश भर में जनजाति डिश के रेस्टोरेंट के रूप में स्थापित करना होगा। जिससे भोजन क्षेत्रमें छवि निर्माण हो उसे शेफ जैसा ओहदा मिले।
7. जो जनजाति के लोग आज बड़े अधिकारी है उनके बच्चो को नई पीढ़ी के व्यवसाय या व्यापार के लिए प्रोत्साहित करना होगा क्योंकि एक छवि पुराने नजरिए को बदल देगी और एक नया नजरिए को साथ लेकर चलेगी। ऐसे कई क्षेत्र है जहाँ जनजाति नहीं है या पिछले राज्यों के जनजाति वहीं है तो उन क्षेत्रों में जनजाति जो पिछड़े क्षेत्रों में है उन्हे ज्यादा मौके देने होगे क्योंकि उनकी वजह से जनजाति छवि ज्यादा नकारात्मक है।
8. जनजाति छवि के लिए प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, फिल्म, वेब जैसे सभी माध्यमों की आवश्यकता है। जिसमें प्रबंधन, विपणन, ब्रांडिंग, पब्लिक रिलेशन, एडवर्टाईजिंग जैसे कई पहलुओं पर काम हो। सरकार एक विशिष्ट मंत्रालय बना दे जो जनजाति छवि निर्माण के कार्य करता हो और जनजाति छवि का एरिया ऐसे विकसित हो जहाँ उनके लिए शिक्षा की कोई कमी न हो, पलायन रूक जाए, आधुनिक सुविधाए उपलब्ध हो, उनकी जनसंख्या नियंत्रित रहे, युवाओं को कई क्षेत्रों के बारे में जानकारी, प्रशिक्षण दिया जाए, असमानता को जड़ से हटा दिया जाए, ऐसे कई कार्य जनजाति छवि निर्माण को अपने आप मुख्य धारा की छवि निर्माण के रूप में स्थापित कर देगें।
9. जनजाति को खाद्य सुरक्षा से उपर लाकर सामाजिक प्रक्रिया तथा आर्थिक विकास की जरूरत है। आज जरूरत है सामाजिक एवं राजनैतिक समुदायों के नेतृत्व की जो आधारभूत छवि के रूप में मौजूद है। हमेशाछवि निर्माण दोनो तरफ से ही होगा एक जनजाति के नजरिए से एक मुख्य धारा के नजरिए से।

निष्कर्ष

जब पूरी दुनिया मे पुंजीवाद से जुड़े सिद्धांतो पर बात हो रही है और हम भी उन्हे ही अपना रहे है तब हमें जनजातियाँ लोगो के बारे में सोचना होगा क्योंकि वो पूँजीवाद के विचार मे कही भी फिट नहीं बैठते है। बैगा, भारिया व सहरिया प्राधिकरणों का निर्माण हुआ लेकिन आज उनके काम करने के तरीको पर नजर डाले तो समझ में आता है कि ये बजट फंक्शनरीज में ज्यादा खर्च होता है। आज भी जनजातियों के पास हरित क्रांति नही पहुँची है। आज विकास का मापक बी.पी.एल. की लाइन है, वास्तव में हमें पता ही नहीं है कि जनजाति विकास क्या है ? उनकी जरूरते क्या है ? हमें विकास को जनजातियों की नजर से भी देखना होगा। निर्णय लेने की क्षमता और चुनने की क्षमता आजादी है। पलायन से गरीबी नहीं जाएगी पलायन कोई हल नही है। अतः जनजाति की गरीबी के लिए वे जहाँ रह रहे है वहीं अवसर देने होगें। चीजों को कीमत के आधार पर नहीं विकल्प के आधार पर देखना चाहिए। आज पुरी दुनिया में जो होड़ है वो इमेज की है आप जो असलियत में है आप उससे अपने आप को बेहतर बताना चाहते हो अगर किसी महिला के होठ पर लिपिस्टिक लगाती है तो वह यह बताना चाहती है कि उसके होठ इतने लाल या आकर्षक है स्वस्थ्य है। जो कि उसके स्वस्थ होने का प्रतिनिधित्व करते है। और स्वस्थ शरीर का प्राकृतिक रूप से पहला काम स्वस्थ बच्चे या संतान पैदा होने के नापा जाता है। कहीं पर ये उर्जा की उपलब्धता और अन्य आयामों को भी प्रदर्शित करता है। प्रकृति में मौजूद प्रत्येक जीवित या अजीवित पदार्थ वस्तु जीवन प्रकृति के नियमो का पालन करते है। इमेज को हमेशा से सुरक्षा के साथ देखा जाता है। इंसान भी इसी नियम का पालन करते है इसलिए समाज ने समुदायो में रहने के नए नए तरीके निकाले है ताकि सुरक्षा को बेहतर बनाया जा सके। जिन्हे परंपराओं और संस्कृतयों के रूप में संजों के रखा गया है। इमेज एक नजरिया है जो व्यक्तिगत है सामूहिक है जो सामाजिक है जो देश काल स्थिति परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है आज पिछड़ापन एक स्टेटस है। जितनी जिसकी तादाद उसको उतना आरक्षण दिया जाता है। आदिवासियों में समता मूलक समाज की स्थापना करना एक ख्वाब की तरह हो गया है और ये कैसे और कब पूरा होगा इसका उत्तर अभी किसी के पास नहीं है। विकास की दिशा उपर से नीचे की ओर है जबकि ये नीचे से उपर की ओर होना चाहिए। हर समुदाय की अपनी आधारभूत आवश्यकताए है, जो की पूरी की जाना आवश्यक है। यह बड़ा और गंभीर सवाल है कि जनजातियों की नकरात्मक छवि कैसे बन गई। जनजातियों के अलावा अन्य समुदायों का मानना है कि जनजातियाँ खुद ही अपना विकास नही चाहती, उन्हे तरक्की नहीं चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिन्हा, एस. (2014) : सेंसस ऑफ इंडिया 2011, मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट सेंसस हेण्डबुक, श्योपुर, सीरीज 24 पार्ट XII ए, डायरेक्टोरेट ऑफ सेंसस आपरेशन्स, मध्यप्रदेश, भोपाल

संदर्भ क्र 6 पृ 30

Hamada, Basyouni Ibrahim (2001). The Arab Image in the minds of western image-makers,The Journal of International Communication, 7(1), 7-35.

Thompson, Craig J. (2004), "Beyond Brand Image: Analyzing the Culture of Brands," in Advances in Consumer Research, Volume 31, Barbara E. Kahn and Mary Frances Luce (Eds.), 98-100.

Tom Gable (2009) Image as part of corporate strategy: Building reputation and results for any business.

Tom Gable (2009), Image as part of corporate strategy: Building reputation and results for any business.

Xiufang Li (Leah) & Naren Chitty, (2009),conflict & communication online, Vol. 8, No. 2, 2009, Reframing national image: A methodological framework.

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/image%20building/Image%20bulding/Hsieh%20WL_revised-OK.pdf

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/image%20building/li_chitty.pdf

file:///H:/phd%20work%202017.8.5/New%20folder/8.8.16/image%20building/working_paper_2-10.pdf

http://dictionary.reverso.net/english-definition/image%20building

http://dictionary.reverso.net/english-definition/image%20building

http://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/image-building

http://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/image-building

http://www.thefreedictionary.com/image-building

http://www.thefreedictionary.com/image-building

http://library.imageworks.com/pdfs/imageworks-library-Surfs-Up-the-making-of-an-animated-documentary.pdf

https://www.entrepreneur.com/encyclopedia/image

https://www.prsa.org/Intelligence/TheStrategist/Articles/view/8103/102/Image_as_part_of_corporate_strategy_Building_reput#.V1Ksnm3bfIV

https://www.prsa.org/Intelligence/TheStrategist/Articles/view/8103/102/Image_as_part_of_corporate_strategy_Building_reput#.V007gjV96M8

https://www.rasjunction.com/2018/03/tribal-movements-of-india-ras-mains.html

https://www.researchgate.net/publication/283835135_Determinants_of_Brand_Image_in_Social_Media 00000aab0f02&acdnat=1502469262_172769bc620fe6b0113270cb54091d83

https://www.documentary.org/images/programs/fsp/IntroDocBudgetBahar.pdf

http://library.imageworks.com/pdfs/imageworks-library-Surfs-Up-the-making-of-an-animated-documentary.pdf

https://www.kbmanage.com/concept/marketing-management

http://www.yourarticlelibrary.com/marketing/marketing-management-meaning-and-importance-of-marketing-management-explained/25885/

http://117.239.40.246/kbs/administrative/rdc_reports/functional_review_of_departments_of_gom/tribal_development_department.pdf

http://tribal.nic.in/Content/DefinitionATDevelopment.aspx

http://tribal.nic.in/Content/IntegratedTribalDevelopmentITDPsITDA.aspx

http://tribal.nic.in/Content/IntegratedTribalDevelopmentITDPsITDA.aspx

http://tribal.nic.in/Content/List%20of%20ITDA%20MADA%20Pockets%20Clusters%20PTGs.aspx

http://tribal.nic.in/content/list%20of%20scheduled%20tribes%20in%20India.aspx

http://tribal.nic.in/content/list%20of%20scheduled%20tribes%20in%20India.aspx

http://tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201306030204039113751StatewisePTGsList.pdf

http://tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201306030204039113751StatewisePTGsList.pdf

http://tribal.nic.in/WriteReadData/userfiles/file/Statistics/StatisticalProfileofSTs2013.pdf

http://unicef.in/Uploads/Resources/Tribal-low-res-for-view.pdf

http://www.historydiscussion.net/essay/tribal-movements-in-india/1797

http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Tribal%20Committee%20Report,%20May-June%202014.pdf

http://www.kcgjournal.org/humanity/issue21/jitendra.php

http://www.kractivist.org/wp-content/uploads/2014/12/Tribal-Committee-Report-May-June-2014.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/9NationalTrAwGuidlns.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/16firstNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/17SecondNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/18SplNCSTReport(mainReport).pdf

http://www.historydiscussion.net/essay/tribal-movements-in-india/1797

http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Tribal%20Committee%20Report,%20May-June%202014.pdf

http://www.kcgjournal.org/humanity/issue21/jitendra.php

http://www.kractivist.org/wp-content/uploads/2014/12/Tribal-Committee-Report-May-June-2014.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/9NationalTrAwGuidlns.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/16firstNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/17SecondNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/18SplNCSTReport(mainReport).pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/19SpecialNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/4thNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/5thNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/NCST/5thNCSTReport.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2016-17.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2015-16.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AnnualReport2014-15.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2004-05.pdf

http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2005-06.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2006-07.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2008-09.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2009-10.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2010-11.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2011-12.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2012-13.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/AR2013-14.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/BhuriaReportFinal.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/DevelopmentChallengesinExtremistAffectedAreas.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/LokurCommitteeReport.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/Mungekar3rdreport2.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/NACRecommendationsforPVTGs.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/ScheduledTribesinIndiaasRevealedinCensus2011.pdf
http://www.tribal.gov.in/writereaddata/AnnualReport/TwelfthFiveYearPlan2012-17.pdf
http://www.tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201409181141029304179SplReportInnerCoverPage.pdf
http://www.tribal.nic.in/WriteReadData/CMS/Documents/201504291141421695180AnnualReport2014-15.pdf
http://www.mdws.gov.in/sites/default/files/Tribal_Development_Plan.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/andaman.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/13-detailofFundReleased.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/1-revisedScheme.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/3-invitationofApplication.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/4-preventionofAtrocities.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/5-minutesofMeeting.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/mj/6-invitationofProposal.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/10TribalFestiGuidlns.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/13GuidelinesandRulesofPhotoCotest.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/8exchangeofVisits.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/NCST-RM/Revisedguidelines.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/reserveNoti.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/RM/MinutesApex2June2017.pdf
http://www.tribal.gov.in/DivisionsFiles/SwLPVTGs.pdf
http://www.tribal.gov.in/livelihoodSupport.aspx
http://www.tribal.gov.in/pvtg.aspx
http://www.tribal.gov.in/researchandMedia.aspx
http://www.tribal.gov.in/ST/3-STinindiaascensus2011_compressed.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/LatestListofScheduledtribes.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/ListofScheduledTribes(STs)withVerylowliteracyrate.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/Statement-State-DistrictwiseSTLiteracyRate-edited.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/StatewisePvTGsList.pdf
http://www.tribal.gov.in/ST/StatisticalProfileofSTs2013.pdf
https://www.hindiaudionotes.in/2016/06/tribal-revolts-before-indian independence.html
https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/summary-of-the-tribal-rebellions-during-british-rule-in-india-1521541943-1
https://www.mpinfo.org/MPinfoStatic/hindi/factfile/janbaiga.asp
https://www.rasjunction.com/2018/03/tribal-movements-of-india-ras-mains.html